(2) भावात्मक पक्ष (Affective Domain) क्रमशः Sem-2- Paper-1

शैक्षिक उद्देश्य का दूसरा वर्गीकरण भावात्मक क्षेत्र का है। भावात्मक पक्ष रुचियों, अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा संवेगों से सम्बन्धित उद्देश्यों की व्याख्या करता है। इसी वर्गीकरण का विकास क्रैथवाल (Krathwohl); मसीआ (Masia) ने किया था। यह भावात्मक पक्ष सामान्यतया हृदय पक्ष से सम्बन्धित है अभिवृत्ति व्यक्ति के उन दृष्टिकोण की ओर संकेत करती है जिनके कारण वह किसी वस्तु, परिस्थिति या व्यक्ति के प्रति सकारात्मक अथवा नकारात्मक व्यवहार प्रदर्शित करता है। शिक्षण के फलस्वरूप शिक्षार्थी में विषय के प्रति रुचि विकसित हो जाती है। इस प्रकार वह विषय से सम्बन्धित पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, टी.वी. आदि को सुनता, पढ़ता है। अतः रुचि जाग्रत होने पर विद्यार्थी स्वयं ज्ञानार्जन के लिए प्रयत्न करने लगता है। वास्तव में विषय के प्रति रुचि विकसित हो जाने पर विद्यार्थी ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में स्वयं प्रयत्नशील हो जाता है तथा वह परमुखापेक्षी नहीं बना रहता। सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित होने पर वह वस्तु, परिस्थिति और व्यक्तियों के प्रति स्वस्थ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाता है, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को उनके वास्तविक परिप्रेक्ष्य में समझता है, नागरिकता के नियमों का आदर करता है अन्य व्यक्तियों के विचारों को आदरपूर्वक सुनता है आदि-आदि। भावात्मक पक्ष को की 6 वर्गों में बाँटा गया है—

(a) आग्रहण या प्राप्ति (Receiving) (b) अनुक्रिया (Responding) (c) अनुमूल्यन (Valuing) (d) सम्प्रत्ययन (Conceptualization) (e) संगठन या व्यवस्थापन (Organization) (F) विशिष्टीकरण या चारित्रीकरण (Characterization)

(a) आग्रहण या प्राप्ति (Receiving):— यह भावात्मक पक्ष का निम्नतम अर्थात आरम्भिक वर्ग है। इस स्तर पर छात्र उस क्रिया के प्रति संवेदनशील होता जो उसे सिखाई जा रही है। दूसरे शब्दों में इस स्तर पर छात्र की इच्छा शक्ति जाग्रत होती है। इस प्रकार छात्र किसी के कार्यों को देखकर सीखना चाहता है। इसके तीन स्तर होते हैं—

(i) क्रिया के प्रति जागरूकता (Awareness of the Phenomenon)
(ii) क्रिया को ग्रहण करने की इच्छा (Willingness to Receive the Phenomenon (iii) नियन्त्रित आकर्षण (Controlled Attention)

Scanned with CamScanner

(b) अनुक्रिया (Responding) :— इसके अन्तर्गत अभिप्रेरणा एवं अवधान में अधिक सक्रियता एवं नियमितता आती है अर्थात् पहले स्तर पर इच्छा किया या जानना चाहा अब इस स्तर पर वह रुचि पूर्वक व्यवहार में लाना या करना चाहता है। इसके भी तीन स्तर होते हैं—
(i) अनुक्रिया की मौन स्वीकृति (ii) अनुक्रिया की सहमति
(iii) अनुक्रिया से संतुष्टि।

(c) अनुमूल्यन (Valuing) :—

इसके अन्तर्गत व्यवहार की वह अभिप्रेरणा आती है जो व्यक्ति किसी मूल्य के प्रति बद्धता पर आधारित होती है। सुविधा के लिए इसे अभिवृत्ति कहा जाता है। इस स्तर पर छात्र अपने व्यवहार को महत्व देने लगता है। अर्थात् इस स्तर पर छात्र किसी वस्तु, तथ्य, घटना, नियम, सिद्धान्त, मूल्य व गुणों के विषय में स्वयं ही भाव प्रकट करता है। इस प्रकार छात्र अपने व्यवहार को महत्व देने लगता है। इसके भी तीन स्तर होते हैं—
(i) मूल्य की स्वीकृति प्रदान करना (ii) किसी विशेष मूल्य को प्राथमिकता प्रदान करना। (iii) मूल्य के प्रति प्रतिबद्धता।

(d) सम्प्रत्ययन (Conceptualization) :—

इस स्तर पर विद्यार्थी उपर्युक्त निर्मित मूल्यों में समता, भिन्नता व सम्बन्ध स्थापित कर धारणाओं का निर्माण करता है। इस प्रकार विद्यार्थी एक से अधिक व्यवहारों को देखकर एक सम्प्रत्यय या अवधारणा बनाने लगता है एवं कॉन्सेप्ट बनाने लगता है।

(e) संगठन या व्यवस्थापन (Organization) :— इस स्तर पर उपर्युक्त चयनित मूल्यों के आधार पर निर्मित विचारों एवं धारणाओं को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित किया जाता है। जब मूल्यों का क्रमबद्ध व्यवस्थापन हो जाता है तो उन्हें आत्मसात करने के लिए मूल्य संहिता का निर्माण किया जाता है। यह मूल्य संहिता निर्माण ही व्यवस्थापन है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जब विद्यार्थियों के समक्ष एक से अधिक मूल्य उपयुक्त लगने लगता है तो उन मूल्यों में से वह विचारकर मूल्यों का संगठन क्रमानुसार करने लगता है। संक्षेप में व्यवस्था का सम्बन्ध मूल्यों के क्रम को संगठित एवं निर्मित करने से है। इस उद्देश्य के दो स्तर होते हैं—
(1) मूल्य का सम्बोधीकरण (मूल्य प्रणाली को धारण करना)।
(2) मूल्य प्रणाली की व्यवस्था या संगठन।

Scanned with CamScanner

(F) विशेषीकरण या चारित्रीकरण (Characterization)

इस स्तर पर विद्यार्थी उपर्युक्त निर्मित मूल्यों के अनुसार स्वयं के व्यवहार को संचालित कर अपनी जीवन शैली का निर्माण करते हैं। इन मूल्यों का व्यक्ति पर इतना गहरा प्रभाव पड़ता है कि वे उसके स्वभाव में आ जाते हैं और उसके जीवन के स्थायी अंग बन जाते हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जब कोई व्यक्ति कुछ मूल्यों अथवा अभिवृत्तियों के अनुसार निरन्तर व्यवहार करता हुआ ऐसे स्तर पर पहुँच जाता है जिसे उसका जीवन दर्शन कहा जाने लगता है। भावात्मक क्षेत्र का यही सर्वोच्च एवं अन्तिम उद्देश्य है। इसके भी दो स्तर हैं—

(i) सामान्यीकृत समुच्चय।

(ii) लक्षण वर्णन (मूल्यों को आत्मसात करना)

Scanned with CamScanner